AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

भारतीय राजनीति में व्यंग्यात्मक कार्टूनों का अध्ययनः आर. के. लक्ष्मण के विशेष संदर्भ में

ORIGINAL ARTICLE

Authors

प्रो. राजकिशोरी सिंह
शोध निर्देशिका
ड्राइंग एण्ड पेंटिंग विभाग
ए.एन.डी.एन.एन. महिला महाविद्यालय
कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

प्रवीण कुमार यादव
शोधार्थी
ड्राइंग एण्ड पेंटिंग विभाग
ए.एन.डी.एन.एन. महिला महाविद्यालय
छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय
कानपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

शोध सार

भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में राजनीतिक व्यंग्यात्मक कार्टून केवल हास्य अथवा मनोरंजन का माध्यम नहीं रहे हैं, बल्कि वे सामाजिक चेतना, राजनीतिक प्रतिरोध तथा जनमत–निर्माण के सशक्त उपकरण के रूप में विकसित हुए हैं। राजनीतिक कार्टूनों ने समय–समय पर सत्ता, प्रशासन, भ्रष्टाचार, सामाजिक असमानता तथा लोकतांत्रिक विडम्बनाओं पर तीक्ष्ण टिप्पणी प्रस्तुत की है। भारतीय राजनीतिक कार्टून परंपरा में आर. के. लक्ष्मण का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उनके प्रसिद्ध पात्र "कॉमन मैन" ने भारतीय जनसामान्य की मौन पीड़ा, असहायता तथा राजनीतिक विडम्बनाओं को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया। प्रस्तुत शोध–पत्र में भारतीय राजनीतिक कार्टूनों की अवधारणा, ऐतिहासिक विकास, लोकतांत्रिक महत्व तथा समकालीन संदर्भों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है। साथ ही आर. के. लक्ष्मण के व्यंग्यात्मक कार्टूनों की कलात्मक शैली, प्रतीकात्मकता एवं सामाजिक प्रभाव का अध्ययन भी किया गया है। शोध में यह स्पष्ट हुआ कि राजनीतिक कार्टून लोकतांत्रिक विमर्श को सक्रिय करने, जनसरोकारों को दृश्य अभिव्यक्ति प्रदान करने तथा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को सुदृढ़ करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। डिजिटल युग में सोशल मीडिया एवं मीम संस्कृति के कारण राजनीतिक व्यंग्य की पहुँच व्यापक हुई है, किन्तु इसके साथ अनेक नैतिक एवं वैचारिक चुनौतियाँ भी उभरकर सामने आई हैं।

मुख्य शब्द

राजनीतिक कार्टून, व्यंग्य, आर. के. लक्ष्मण, दृश्य संस्कृति, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता.

प्रस्तावना

मानव सभ्यता के इतिहास में व्यंग्य की परम्परा अत्यंत प्राचीन रही है। जब शब्द अपनी सीमाओं तक पहुँच जाते हैं, तब रेखाएँ बोलने लगती हैं। राजनीतिक कार्टून इन्हीं बोलती हुई रेखाओं की कला है, जो समाज, सत्ता तथा जनसामान्य के मध्य संवाद स्थापित करती है। भारतीय लोकतंत्र में राजनीतिक कार्टूनों ने सामाजिक चेतना

को जाग्रत करने, सत्ता की विसंगतियों को उजागर करने तथा लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

राजनीतिक कार्टून दृश्य व्यंग्य की वह विधा है, जिसमें समकालीन राजनीतिक घटनाओं, नीतियों, नेताओं तथा सामाजिक परिस्थितियों को प्रतीकों, रूपकों और हास्य के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। इसका उद्देश्य केवल हास्य उत्पन्न करना नहीं होता, बल्कि सत्ता एवं व्यवस्था की आलोचनात्मक समीक्षा करना भी होता है। राजनीतिक कार्टून समाज के भीतर व्याप्त असंतोष, विडम्बना तथा जनभावनाओं को अत्यंत संक्षिप्त किन्तु प्रभावशाली रूप में अभिव्यक्त करते हैं।

भारतीय राजनीतिक कार्टून परंपरा में आर. के. लक्ष्मण का नाम अत्यंत सम्मान के साथ लिया जाता है। उन्होंने अपने कार्टूनों के माध्यम से भारतीय राजनीति, नौकरशाही, भ्रष्टाचार, चुनावी वादों तथा आम नागरिक की समस्याओं को सरल किंतु तीक्ष्ण शैली में प्रस्तुत किया। उनका ''कॉमन मैन'' भारतीय लोकतंत्र का मौन साक्षी बनकर उभरा, जो व्यवस्था की विडम्बनाओं को बिना कुछ कहे अभिव्यक्त कर देता है।

शोध समस्या

भारतीय लोकतंत्र में राजनीतिक कार्टूनों की भूमिका निरंतर महत्वपूर्ण रही है, किन्तु डिजिटल युग में राजनीतिक व्यंग्य की प्रकृति, प्रभाव तथा अभिव्यक्ति के स्वरूप में व्यापक परिवर्तन दिखाई देता है। ऐसी स्थिति में यह प्रश्न महत्वपूर्ण हो जाता है कि क्या राजनीतिक कार्टून आज भी जनमत–निर्माण तथा लोकतांत्रिक चेतना के प्रभावशाली माध्यम बने हुए हैं?

शोध के उद्देश्य

1. भारतीय राजनीतिक कार्टूनों के ऐतिहासिक विकास का अध्ययन करना।
2. आर. के. लक्ष्मण के व्यंग्यात्मक कार्टूनों की कलात्मक एवं वैचारिक विशेषताओं का विश्लेषण करना।
3. राजनीतिक कार्टूनों के सामाजिक एवं लोकतांत्रिक प्रभाव का अध्ययन करना।
4. डिजिटल युग में राजनीतिक व्यंग्य एवं मीम संस्कृति के परिवर्तित स्वरूप का परीक्षण करना।

शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध गुणात्मक (Qualitative) एवं विश्लेषणात्मक (Analytical) पद्धति पर आधारित है। अध्ययन के लिए राजनीतिक कार्टूनों, पुस्तकों, शोध–पत्रों, समाचार–पत्रों तथा डिजिटल माध्यमों का संदर्भ लिया गया है। आर. के. लक्ष्मण, अबू अब्राहम तथा ओ. वी. विजयन के राजनीतिक कार्टूनों का तुलनात्मक एवं व्याख्यात्मक अध्ययन करते हुए भारतीय राजनीतिक व्यंग्य की प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया गया है।

साहित्य समीक्षा

भारतीय राजनीतिक व्यंग्य पर अनेक विद्वानों एवं कार्टूनिस्टों ने महत्वपूर्ण कार्य किया है। आर. के. लक्ष्मण के कार्टूनों को भारतीय मध्यमवर्गीय समाज की पीड़ा एवं राजनीतिक विडम्बनाओं का प्रतिनिधि माना गया है। अबू अब्राहम ने आपातकालीन राजनीति तथा सत्ता के दमनकारी स्वरूप पर तीक्ष्ण व्यंग्य प्रस्तुत किया। ओ. वी. विजयन के कार्टूनों में दार्शनिक गहराई एवं साहित्यिक संवेदनशीलता दृष्टिगोचर होती है। समकालीन अध्ययनों में डिजिटल मीम संस्कृति को राजनीतिक व्यंग्य के नवीन रूप के रूप में देखा जा रहा है, जिसने राजनीतिक अभिव्यक्ति को अधिक व्यापक एवं त्वरित बना दिया है।

भारतीय राजनीतिक कार्टूनों का ऐतिहासिक विकास औपनिवेशिक काल और राष्ट्रवादी चेतना भारत में राजनीतिक कार्टूनों का विकास औपनिवेशिक काल में प्रारम्भ हुआ। उस समय समाचार–पत्रों एवं पत्रिकाओं में प्रकाशित व्यंग्यचित्र ब्रिटिश शासन की नीतियों की आलोचना का प्रभावशाली माध्यम बने। इन कार्टूनों ने जनता के भीतर राष्ट्रवादी चेतना को जागृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ब्रिटिश शासन की दमनकारी नीतियों, कर व्यवस्था एवं सामाजिक शोषण को कार्टूनिस्टों ने तीक्ष्ण व्यंग्य के माध्यम से प्रस्तुत किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय लोकतंत्र की स्थापना हुई, किन्तु भ्रष्टाचार, नौकरशाही, गरीबी तथा राजनीतिक अवसरवाद जैसी समस्याएँ भी उभरकर सामने आईं। राजनीतिक कार्टूनों ने इन विसंगतियों को जनता के समक्ष प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। इसी काल में आर. के. लक्ष्मण के कार्टून अत्यंत लोकप्रिय हुए। उनका "कॉमन मैन" भारतीय समाज की मौन संवेदनाओं का प्रतीक बन गया।

आर. के. लक्ष्मण के व्यंग्यात्मक कार्टूनों का अध्ययन

आर. के. लक्ष्मण भारतीय राजनीतिक कार्टून कला के सबसे प्रभावशाली हस्ताक्षरों में से एक हैं। उनकी रेखाओं में सरलता होने के बावजूद गहन वैचारिक तीक्ष्णता विद्यमान है। उन्होंने भारतीय राजनीति, प्रशासनिक अव्यवस्था, सामाजिक विषमता तथा लोकतांत्रिक विडम्बनाओं को अत्यंत प्रभावशाली रूप में चित्रित किया।

उनके प्रसिद्ध पात्र "कॉमन मैन" की विशेषता उसका मौन है। वह बोलता नहीं, किंतु उसकी उपस्थिति ही व्यवस्था की विसंगतियों को उद्घाटित कर देती है। "कॉमन मैन" भारतीय मध्यमवर्गीय नागरिक की असहायता, पीड़ा तथा लोकतांत्रिक अपेक्षाओं का प्रतिनिधि है। लक्ष्मण के कार्टूनों में हास्य के साथ–साथ करुणा, व्यंग्य तथा सामाजिक यथार्थ का अद्भुत समन्वय दिखाई देता है।

व्यंग्य और दृश्य–सौन्दर्य

राजनीतिक कार्टून केवल राजनीतिक टिप्पणी नहीं होते, बल्कि उनमें कलात्मक सौन्दर्यबोध भी निहित रहता है। कार्टूनिस्ट रेखाओं, आकृतियों, प्रतीकों एवं रूपकों के माध्यम से अनेक अर्थ–स्तरों का निर्माण करता है।

व्यंग्य का सौन्दर्य उसकी तीक्ष्णता में निहित होता है। उदाहरणस्वरूप, किसी नेता को अत्यधिक विशाल कुर्सी पर बैठा हुआ दिखाना केवल चित्रात्मक प्रस्तुति नहीं, बल्कि सत्ता लोलुपता का प्रतीक बन जाता है। इसी प्रकार टूटी हुई सड़क, जंजीरों में जकड़ा नागरिक अथवा फटी हुई जेब लोकतांत्रिक विफलताओं के रूपक के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

राजनीतिक कार्टूनों की यही कलात्मकता उन्हें साहित्य और चित्रकला के मध्य एक सशक्त सेतु के रूप में स्थापित करती है।

लोकतंत्र और राजनीतिक कार्टून

लोकतांत्रिक व्यवस्था में राजनीतिक कार्टून अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के सशक्त माध्यम हैं। वे सत्ता को निरंकुश होने से रोकते हैं तथा नागरिकों के भीतर प्रश्न करने की चेतना उत्पन्न करते हैं। भारतीय संविधान के अनुच्छेद 19(1)(क) के अंतर्गत अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार राजनीतिक व्यंग्य को वैचारिक आधार प्रदान करता है।

राजनीतिक कार्टून जनसामान्य की आवाज़ बनकर सामने आते हैं। वे उन समस्याओं को दृश्य रूप प्रदान करते हैं, जिन्हें सामान्य समाचार अनेक बार प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त नहीं कर पाते। भ्रष्टाचार, बेरोज़गारी, महँगाई, चुनावी वादे तथा संसद की कार्यप्रणाली जैसे विषय सदैव राजनीतिक कार्टूनों के केंद्र में रहे हैं।

डिजिटल युग और राजनीतिक व्यंग्य

समकालीन भारत में राजनीतिक कार्टूनों का स्वरूप तीव्र गति से परिवर्तित हुआ है। अब वे केवल समाचार–पत्रों तक सीमित नहीं रह गए हैं। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे फेसबुक, इंस्टाग्राम तथा एक्स (पूर्व ट्विटर) पर डिजिटल कार्टून एवं मीम संस्कृति अत्यधिक लोकप्रिय हो चुकी है।

डिजिटल माध्यमों ने राजनीतिक व्यंग्य को अधिक व्यापक, त्वरित एवं जनसुलभ बना दिया है। आज कोई भी कार्टून कुछ ही क्षणों में लाखों लोगों तक पहुँच सकता है। युवा पीढ़ी राजनीतिक विचारों की अभिव्यक्ति के लिए मीम संस्कृति का व्यापक उपयोग कर रही है।

हालाँकि डिजिटल युग में व्यंग्य की तीव्रता बढ़ी है, किन्तु इसके साथ अनेक चुनौतियाँ भी सामने आई हैं। कई बार हास्य और अपमान के मध्य की सीमाएँ धुंधली हो जाती हैं। सोशल मीडिया पर राजनीतिक ध्रुवीकरण तथा त्वरित प्रतिक्रियाओं की प्रवृत्ति ने गंभीर व्यंग्य को सतही हास्य में परिवर्तित करने का खतरा भी उत्पन्न किया है।

चुनौतियाँ एवं सीमाएँ

राजनीतिक कार्टूनों के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता से संबंधित है। अनेक अवसरों पर कार्टूनिस्टों को राजनीतिक दबाव, सेंसरशिप तथा कानूनी विवादों का सामना करना पड़ता है।

भारतीय समाज की बहुसांस्कृतिक संरचना में धार्मिक, सामाजिक एवं राजनीतिक संवेदनशीलताएँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। ऐसी स्थिति में राजनीतिक व्यंग्य कई बार विवाद का विषय बन जाता है। हास्य और असम्मान के मध्य की सूक्ष्म रेखा को बनाए रखना कार्टूनिस्ट के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती है।

निष्कर्ष

भारतीय राजनीति में व्यंग्यात्मक कार्टून लोकतांत्रिक चेतना की सशक्त अभिव्यक्ति हैं। वे केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक प्रतिरोध, जन–जागरण तथा राजनीतिक विमर्श के प्रभावशाली उपकरण हैं। औपनिवेशिक काल से लेकर डिजिटल युग तक राजनीतिक कार्टूनों ने समय की संवेदनाओं को रेखाओं में अभिव्यक्त करने का कार्य किया है।

आर. के. लक्ष्मण के "कॉमन मैनष से लेकर समकालीन डिजिटल मीम संस्कृति तक भारतीय राजनीतिक व्यंग्य ने आम जनता को राजनीति से जोड़ने तथा सत्ता से प्रश्न पूछने की परम्परा को जीवित रखा है। लोकतंत्र की वास्तविक शक्ति तभी सुरक्षित रह सकती है, जब व्यंग्य की यह परम्परा स्वतंत्र, सक्रिय तथा वैचारिक रूप से सजग बनी रहे।

संदर्भ सूची

1. Abraham, Abu (1977) *Games of the Emergency.* Delhi Press, New Delhi.
2. Barthes, Roland (1977) *Image, Music, Text.* Fontana Press, London, U.K.
3. Laxman, R. K. (1990) *The Best of Laxman.* Penguin Books, New Delhi.
4. Laxman, R. K. (1988) *The Tunnel of Time.* Penguin Books, New Delhi.
5. Vijayan, O. V. (2006) *Tragic Idiaom: O.V. Vijayan cartoons & Notes on India.* D.C. Books, Kottayam.

––==00==––